नूर परिकरमा अंदर तांई

नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूर के।
ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूं किनार बन ए।। १ ।।

अक्षरधाम की तरफ पाट घाट नूर का है। पाट घाट के बारह थंभ, ऊपर की चांदनी, किनारे के कठेड़े और वन सब नूर के हैं।

नूर घाट जांबू बन का, और नूर घाट नारंग।
बट घाट छत्री बन हिंडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग।। २ ।।

जांबू वन तथा घाट, नारंगी वन तथा घाट, बट घाट की छतरी व हिंडोले तथा दोनों पुल महल नूरी रंगों के शोभा देते हैं।

नूर किनारे रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार।
ताल हिंडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार।। ३ ।।

जमुनाजी के किनारे की रेती, महल, चबूतरे, किनारे, दोनों पुलों के बीच का ताल, पुलों के हिंडोले, वन, कुंज, निकुंज की अपार शोभा सब नूर की है।

नूर नेहेरें मोहोलों तले, नूर ढांपे चले अनेक।
नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक।। ४ ।।

महलों के नीचे नहरें नूर की हैं। बहुतेरी नहरें ढंपी चलती हैं जिनमें पानी चारों तरफ चलता है। यह सभी सुख नूर के हैं।

मोहोल मानिक पहाड़ नूर के, कई नेहेरें चादरें नूर ताल।
कई मोहोल हिंडोले नूर के, ए नूर देखे बदले हाल।। ५ ।।

मानिक पहाड़, मानिक महल, नहरें, पहाड़ के ऊपर का ताल, महल के अन्दर के हिंडोले सब नूर के हैं। ऐसे नूर को देखकर हालत बदल जाती है।

कहा कहूं हिंडोले नूर के, नूर रूहें झूलें बारे हजार।
इन बिध नूर हिंडोले, नाहीं न नूर सुमार।। ६ ।।

बड़े हिंडोले नूर के हैं। जहां बारह हजार रूहें मिलकर झूलती हैं। इस तरह से नूर बेशुमार है।

बन नूर नेहेरें ढांपी चली, कई नेहेरें बन नूर विस्तार।
कई नूर नेहेरें मिली सागरों, कई नूर नेहेरें आवें वार।। ७ ।।

वन की कुछ नहरें ढपी चलती हैं। कई नहरें वन में फैल कर चलती हैं। कई नहरें एक साथ मिलकर सागरों को जाती हैं। इस तरह से इन नूरी नहरों का शुमार नहीं है।

कई मोहोलातें इत नूर की, कई टापू नूर मोहोलात।
ए निपट बड़े मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात।। ८ ।।

यहां कई मोहोलातें नूर की हैं। टापू महल नूर के हैं। बड़ी रांग के महल नूर के हैं। इन सबका नूर आकाश में नहीं समाता।

Nijanand App

नूर परिकरमा दीजिए, फिरते जाइए नूर बन में।
बाग परे नूर अंन बन, आगूं बन बिना नूर जिमी ए।। ९ ।।

इन सबकी नूरी परिकरमा देकर नूर बाग में आ जाइए। इस बाग के आगे अन्न वन और उसके आगे दूब दुलीचा तथा पच्छिम की चौगान सब नूर के हैं।

दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान।
दूर लग नूर या विध, नूर खेलें इत चौगान।। १० ।।

दूब दुलीचे का नूर आसमान तक जाता है। नूरी पच्छिम चौगान में बहुत दूर तक श्री राजश्यामाजी और सखियां खेलते हैं।

आगूं बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुबन।
कई हिंडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन।। ११ ।।

आगे बड़ा वन, मधुवन, हिंडोलों का आसमान तक नूर ही नूर है।

नूर पांच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल।
ए आठों पहाड़ तले नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल।। १२ ।।

पुखराज के पांच पेड़, उत्तर पच्छिम की सीढ़ियां तथा पुखराजी ताल यह आठों पहाड़ के नीचे-ऊपर बेमिसाल महलों में नूर ही नूर की शोभा है।

हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान।
तापर मोहोल नूर आकासी,ए नूर आकास मोहोल सुभान।। १३ ।।

पुखराज पहाड़ के हजार गुर्ज, चांदनी, आकाशी महल सब श्री राजजी महाराज के नूर से हैं।

इत बड़े जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल।
इत निपट बड़ा खेल नूर का, हंसे रूहें हादी नूरजमाल।। १४ ।।

यहां पर बड़े-बड़े जानवर तथा उनके खेल सब नूर के हैं। जिन्हें देखकर रूहें खुश होती हैं। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें ऐसे नूर के बड़े खेल को देखकर हंसते हैं।

चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत।
सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हंसत।। १५ ।।

चारों तरफ के महल, पुखराजी ताल, पुखराजी ताल से अधबीच के कुण्ड में गिरने वाली सोलह चादरें सब नूर की हैं। जिन्हें देख-देखकर नूरी रूहें हंसती हैं।

तले बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत।
चारों तरफ बड़ी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित।। १६ ।।

पुखराजी ताल के नीचे बंगलों में चारों तरफ नहरें चलती हैं तथा चारों तरफ नहरें घूमती हैं। यह सब नूर की शोभा है जो और कहीं नहीं देखी।

इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कई उछलत।
खूब खुसाली नूर भरी, नूर हंसें खेलें रमत।। १७ ।।

बंगला, बगीचा, फव्वारे जहां रूहें हंसती खेलती हैं, सब नूर ही नूर की शोभा है।

Nijanand App

नूर बाहेर नेहेर आई कुंड में, आगूं नूर चबूतरे।
जोए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारे।। १८ ।।

बाहर से आने वाली नहर जो नूर के ढंपे चबूतरे से नूर कुण्ड में आती है। फिर आगे जमुनाजी ढंपी चलती हैं। किनारे पर नूरी महल बने हैं और किनारे सब नूर के हैं।

दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल।
नूर एक मोहोल एक चबूतरा, ए नूर देख होइए खुसाल।। १९ ।।

जमुनाजी के दो ढके किनारे नूर के हैं। जमुनाजी घूमकर हौज कौसर ताल की तरफ जाती हैं। वहां एक महल, एक चबूतरा सब नूर के हैं। जिन्हें देखकर खुशी होती है।

बड़ा बन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित।
जोए नूर आई पुल तले, सो क्यों कही जाए नूर सिफत।। २० ।।

बड़ा वन महल और जमुनाजी जो केल पुल तक आई हैं, सब नूर के हैं। जिनका वर्णन हो नहीं सकता।

ए मोहोल नूरजमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर।
नूर नेहेरें दस घड़नाले, ए खूबी नूर जुबां कहे क्यों कर।। २१ ।।

जमुनाजी के ऊपर नूरजमाल श्री राजजी महाराज के नूर के दो पुल हैं और पुल के दस दरवाजों में से नूर के ही दस घड़नाले हैं। ऐसे नूर की सुन्दर खूबी का कैसे बयान करें?

केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार।
पोहोंची नूर पुल बराबर, आगूं लिबोई नूर अनार।। २२ ।।

केल घाट, केलों के गुच्छे, चौक, जमुनाजी के पुल तक का किनारा और आगे लिबोई तथा अनार के घाटों की सब शोभा नूर की है।

ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट।
अति सोभा आगूं छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट।। २३ ।।

जमुनाजी के केल पुल से आगे पाल पर केल, लिबोई और अनार घाट आए हैं। पाल के ऊपर पांच बड़े वन के पेड़ों के मध्य चार-चार चौकियां पचास-पचास मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आई हैं और इनकी भोमें सब नूर की हैं। इसके आगे जल पर बने पाट घाट की छत्री की शोभा नूर की है।

नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर द्वार से आए फेर द्वार।
चारों खूंटों नूर थंभ नीलवी, नूर पाच रंग बारे सुमार।। २४ ।।

हीरा, माणिक, पाच, पुखराज तथा चारों कोने के चार नीलवी (नीलम) के थंभे पाट घाट में पांच रंगों के बारह थंभ शोभा देते हैं। यह सब नूर के हैं।

नूर नेहेरें तीन तले चलें, नूर पाट एता जल पर।
ठौर खेलन नूर जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर।। २५ ।।

पाट घाट के नीचे से जमुनाजी के तीन घड़नाले चलते हैं। यह श्री राजश्यामाजी और रूहों की खेलने की जगह है जो सब नूर की है।

Nijanand App

दोऊ पुल नूर सात घाट में, रूहें देखें नूर रोसन।
हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन।। २६ ।।

दोनों पुल, सात घाट देखकर रूहें खुश होती हैं। यहां पर पशु-पक्षी रात-दिन श्री राजजी महाराज का ही जिक्र करते हैं। यह सब नूर के हैं।

नूर भोम दूजी बैठक, पसु पंखियों एह नूर ठौर।
कई जिनसें नूर जिकर, बिना हक न बोले नूर और।। २७ ।।

वनों की दूसरी भोम में पशु-पक्षी रहते हैं जो सदा श्री राजजी महाराज के ही गुण गाते हैं और कुछ नहीं बोलते। यह सब नूर के हैं।

आगूं द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान।
नूर जंग होत सबों बीचों, कोई सके न नूर काहूं भान।। २८ ।।

धाम के दरवाजे के आगे की रेती का नूर आसमान तक जाता है। आसमान की तथा रेती की किरणें टकराती हैं। यह सब नूर की हैं। कोई भी किरण किसी किरण से कम नहीं है।

आगूं दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत।
लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जानें हक सिफत।। २९ ।।

चांदनी चौक के दो सुन्दर चबूतरे, दोनों पर लाल, हरे वृक्षों की शोभा कहने में नहीं आती। यह सब शोभा नूर की है।

नूर आगूं दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार।
हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूं सुमार।। ३० ।।

रंग महल के आगे चांदनी तक पचास हांसों में बेशुमार नूर ही नूर की शोभा है।

नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग।
खड़ियां आगूं नूर चांदनी, नूर देखें अर्स नूर अंग।। ३१ ।।

रंग महल का दरवाजा तथा सामने अक्षर धाम का दरवाजा नूरी है। दोनों की नूरी किरणें आपस में टकराती हैं। सखियां चांदनी चौक में खड़ी होकर इस नूरी शोभा को देखती हैं।

नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलवी नूर थंभ।
नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ।। ३२ ।।

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच और नीलवी (नीलम) के सब नूरी थंभे हैं। इन पांचों रंगों के दस थंभों की शोभा दीवार में दिखाई देती है जो चकित करने वाली है। यह सब शोभा नूर की ही है।

अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अर्स।
नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पे और सरस।। ३३ ।।

अब धाम के नूरी दरवाजे से अन्दर आओ। रंग महल के अन्दर के नूर को देखो। यहां के मन्दिर, चौक, चबूतरे एक से एक अच्छे सब नूर के हैं।

नूरै के मोहोल मन्दिर, नूर दिवालें द्वार।
नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार।। ३४ ।।

महल, मन्दिर, दीवारें, दरवाजे, नक्शकारियों के कटाव और सारा विस्तार सब नूर के हैं।

Nijanand App

चलो नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ गिरदवाए।
देख मेहेराव नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए।। ३५ ।।

नूर के दरवाजे से चलकर चारों तरफ नूरी परिकरमा को देखो। वहां से मेहराब और झरोखों की शोभा, बागों की शोभा, देखकर वापस धाम दरवाजे आए। यह सब नूर ही नूर की शोभा है।

नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख।
फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख।। ३६ ।।

नूर के चबूतरे पर नूर के चेहेबच्चे हैं और चौक तथा दरवाजे सभी सुन्दर नूर के दिखाई देते हैं।

दो दो मन्दिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार।
यों नवे भोम नूर मन्दिर, नूर झरोखे किनार।। ३७ ।।

दो-दो मन्दिरों की हारें और इनके बीच दो-दो थंभों की हारें सब नूर की हैं। किनारे के झरोखे, नौ भोम के मन्दिर सब नूर के हैं।

यों सब भोमें नूर गिरदवाए, थंभ गलियां नूर मन्दिर।
मेहेराव झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अन्दर।। ३८ ।।

रंग महल की सभी भोमें चारों तरफ के थंभें, गलियां, झरोखे, मेहराब सब नूर के हैं।

इन अन्दर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन।
साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगूं नूर इन।। ३९ ।।

अन्दर की हवेलियां, महलों से लगते महल तथा दो-दो चबूतरे जो दरवाजे के सामने आते हैं, सब नूर के हैं।

इन अन्दर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियों दोए हार।
नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगूं दोए द्वार।। ४० ।।

इनके अन्दर की हवेलियां तथा हवेलियों के दो हारों के बीच दरवाजे के आगे आए दो चबूतरे तथा बीच के चौक की शोभा सब नूर की है।

ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लग लग बराबर।
आगूं नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुन्दर।। ४१ ।।

यह जो घेरकर पास-पास में हवेलियां आईं और उनके दरवाजे के आगे चबूतरे अति सुन्दर हैं। यह सब नूर के हैं।

आए फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत।
नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत।। ४२ ।।

चारों तरफ के दरवाजे नूर के हैं। शोभा सब नूर की है। सामने की हवेली की और उसके द्वार की शोभा सब नूर की है।

द्वार द्वार नूर मुकाबिल, नूर चबूतरों चबूतरे।
नूर मोहोल मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए।। ४३ ।।

हवेलियों के दरवाजे के सामने दरवाजे आए। चबूतरे के सामने चबूतरे तथा महल के सामने महल की दोनों तरफ की शोभा सब नूर की है।

Nijanand App

दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार।
नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार।।४४।।

दो महलों के बीच में गली आई है तथा दोनों महलों के सामने गली में चार चबूतरे आए हैं। दोनों चबूतरों के बीच गली आई है। इनके दरवाजे आमने-सामने हैं जो सब नूर के हैं।

जेते फिरते नूर द्वार ने, आगूं नूर चबूतरे दोए दोए।
नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए।। ४५।।

घेरकर हवेलियों के जितने द्वार आए हैं उन सब दरवाजों के आगे दो-दो चबूतरे हैं। आमने-सामने चारों चबूतरों के चौक तथा दरवाजे सब नूर की शोभा देते हैं।

नूर चौक ऐसे ही गिरदवाए, नूर फिरते आए सब में।
बीच फिरती आई नूर गली नूर गली सोभा पौरी ए।।४६।।

ऐसे चौक घेरकर सब हवेलियों में आए हैं और उनके बीच एक नूर की गली आई है और मेहराब शोभा देते हैं।

एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार।
दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पौरी चार।।४७।।

एक गली के चौरस्ते से दूसरे चौरस्ते के किनारे तक आएं तो दोनों चौरस्तों की गलियों में चार-चार मेहराब बनते हैं, जो सब नूर के हैं।

चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगूं नूर द्वार।
नूर पौरी चार हर चौरे, ए नूर सोभा ना किन सुमार।।४८।।

चारों हवेलियों के चारों चौराहों पर चार थंभों की हारें नूर की हैं और उनकी चारों मेहरावें नूर की हैं। दरवाजे के आगे की भी चार मेहरावें व चार हारें नूर की हैं। यह नूर की शोभा बेशुमार है।

हर दोऊ द्वार आगूं नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर।
हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर।।४९।।

दोनों दरवाजों के आगे नूर के चौक और चौकों पर चार चबूतरे और चार चबूतरों पर चौबीस मेहरावें सब नूर की बनी हैं।

दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गिरदवाए।
बीच नूर गली कई पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए।।५०।।

दो हवेलियों के बीच दो हारें थंभों की तथा गली और गली के बीच की मेहरावें सब नूर की हैं। इनकी शोभा कही नहीं जाती।

आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिन से।
नूर गली दोए दाएं बाएं, गली चली नूर हवेलियों में।।५१।।

आड़ी गलियां जब आती हैं तो हवेलियों के कोनों पर चौक बन जाता है। दो गलियां दाएं-बाएं हवेलियों में जाती हैं। यह सब नूर की शोभा है।

Nijanand App

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत।
ए नूर गली दोऊ तरफों, आखिर नूर मोहोलों पोहोंचत।।५२ ।।

नूर की गलियां नूर की हवेलियों से निकलती हैं और हवेली में ही पहुंचती हैं। यह सब नूर की हैं।

याही विध नूर गिरदवाए, चौक हुए नूर गलियों के।
नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए।।५३ ।।

इसी तरह चारों तरफ हवेलियों के चौक और गलियां नूर की हैं। परिकरमा करके देखें तो इन चौकों और गलियों की शोभा बेशुमार है।

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत।
ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत।।५४ ।।

नूर की चार मोहोलातें घेरकर आई हैं जिनकी खूबी बेशुमार है। नूर गंजान गंज (ढेर का ढेर) भरा है। यह तो धनी के हुकम से मैं कुछ नूर का बयान कर रही हूं।

इन अंदर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस।
कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस।।५५ ।।

इसके अन्दर भी कई मोहोलातें अलग-अलग तरीके के बने हैं। इन महलों के अन्दर नूर की गलियां हैं और जिसे देखें वही सबसे अच्छा लगता है, क्योंकि सब नूर का है।

इन अंदर नूर कई जुगतें, नूर कई मंदिर मोहोलात।
नूर जिनसें कई जुगतें, नूर अर्स गंज कह्यो न जात।।५६ ।।

इन महलों के अन्दर कई मन्दिर हैं जिनके अन्दर कई तरह की शोभा है और उनके अन्दर कई सामान हैं जो नूर ही नूर के बने हैं।

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर।
महामत मोमिन नूर का, नूर देखे अर्स सहूर।।५७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब रंग महल की दसों नूरी भोमों को देखें और देखकर हृदय में धारण करें।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। २०४४ ।।

भोम पेहेली नूर खिलवत

कहे आमर नूर अर्स का, ए जो अर्स नूरजमाल।
दिल अर्स मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल।।१ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से उनके ही परमधाम का अब वर्णन करती हूं। मोमिनों का दिल श्री राजजी महाराज का अर्श है, इसलिए इसे सुनकर मोमिनों की रहनी तुरन्त बदलेगी।

ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत।
हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत।।२ ।।

इसलिए रंग महल की पहली भोम में मूल-मिलावा जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठी हैं, उसके नूर का वर्णन करती हूं।

Nijanand App